IJARASEM

ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 12, Issue 1, January- February 2025

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.583

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

मुजफ्फरपुर, बिहार के शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण एवं जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

बिभूति रंजन [1], डॉ मांडवी राय [2]

अध्येतय (पीएचडी), शिक्षा विभाग, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, राजाउलातु, नामकुम, राँची[1]

शिक्षा विभाग, स्कूल ऑफ़ एजुकेशन, वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, राजाउलातु, नामकुम, राँची[2]

सारांश: यह अध्ययन मुजफ्फरपुर, बिहार राज्य के शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता, उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, सामुदायिक भागीदारी, शिक्षण विधियों तथा पर्यावरणीय दृष्टिकोण को समझकर दोनों क्षेत्रों के बीच मौजूद अंतर को उजागर करना है। कुल 400 छात्रों (200 शहरी और 200 ग्रामीण) का चयन स्ट्रैटिफाइड रैंडम सैंपलिंग तकनीक के माध्यम से किया गया और स्वनिर्मित प्रश्नावली के द्वारा 5-बिंदु लिकर्ट स्केल पर उनके विचार एकत्रित किए गए। प्रश्नावली की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने हेतु क्रोनबाख अल्फा का उपयोग किया गया। विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि शहरी छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता अधिक है, जो बेहतर शैक्षिक संसाधनों, प्रभावी शिक्षण विधियों और सक्रिय सामुदायिक भागीदारी के कारण संभव हो पाई। वहीं, ग्रामीण छात्रों में जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत कम पाया गया, जिसके पीछे संसाधनों की कमी, अपर्याप्त शिक्षण पद्धतियाँ और सामुदायिक सहभागिता में गिरावट प्रमुख कारण हैं। इसके अलावा, पारिवारिक सामाजिक-आर्थिक स्थिति का भी छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव देखा गया। अंततः, अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षकों और शैक्षिक संस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशें प्रदान करता है, ताकि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच पर्यावरणीय शिक्षा में विद्यमान अंतर को कम किया जा सके। ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाने, शिक्षकों के लिए पर्यावरणीय शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने और सामुदायिक जागरूकता अभियानों को सुदृढ़ करने की सिफारिश की गई है।

प्रमुख शब्द (Keywords): पर्यावरणीय जागरूकता, शहरी-ग्रामीण अंतर, शिक्षा संसाधन, सामुदायिक भागीदारी

I. परिचय

यह शोध शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण की तुलना पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य पर्यावरणीय जागरूकता और शिक्षा की प्रभावशीलता को समझना है, जिससे नीतिगत सिफारिशें प्रदान की जा सकें।
शिक्षा व्यक्ति के ज्ञान, अनुभव और दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायक होती है, और पर्यावरण शिक्षा इसके महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। यह पारिस्थितिकी तंत्र की समझ बढ़ाकर प्रकृति के प्रति सम्मान विकसित करने में सहायक होती है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण और अभिवृत्ति का अध्ययन यह दर्शाता है कि व्यक्ति और समाज किस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग और संरक्षण करते हैं। औद्योगीकरण, शहरीकरण और वैज्ञानिक प्रगति के कारण बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण ने पारिस्थितिक संतुलन को प्रभावित किया है, जिससे जल, वायु और भूमि की गुणवत्ता में गिरावट आई है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष पर्यावरणीय नीति निर्माण और शिक्षा कार्यक्रमों को दिशा प्रदान कर सकते हैं।

वैश्विक और भारत में पर्यावरणीय चिंताओं का अवलोकन

पर्यावरणीय चिंताएँ आज वैश्विक स्तर पर प्रमुख मुद्दों में से एक हैं, जो मानव जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण, जैव विविधता का ह्रास, और प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन जैसी समस्याएँ अब गंभीर रूप धारण कर चुकी हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप ग्लेशियर पिघल रहे हैं, समुद्र का स्तर बढ़ रहा है, और चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि हो रही है।

भारत में भी ये समस्याएँ तेजी से उभर रही हैं। देश में बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण, औद्योगिकीकरण, और कृषि पद्धतियों में बदलाव के कारण पर्यावरण पर दबाव बढ़ रहा है। वायु और जल प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा, वन्यजीवों का ह्रास, और कृषि भूमि की उर्वरता में कमी जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से देखने को मिल रही हैं। भारत की नदियाँ, जो कभी जीवनदायिनी मानी जाती थीं, अब प्रदूषण की चपेट में हैं। गंगा और यमुना जैसी प्रमुख नदियाँ अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी हैं।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

भारत में जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित वर्षा, सूखा, बाढ़, और चक्रवाती तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि हो रही है, जिससे कृषि, जल संसाधनों, और आम जनजीवन पर गहरा असर पड़ रहा है। बढ़ते प्रदूषण और बिगड़ते पर्यावरण के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी बढ़ रही हैं, जैसे कि श्वसन रोग, हृदय रोग, और कैंसर।

इन वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर उभरती पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण, और जनजागृति की आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि आने वाली पीढ़ियों को पर्यावरणीय समस्याओं की गंभीरता और उनके समाधान के प्रति जागरूक किया जाए, ताकि वे जिम्मेदार नागरिक बनकर पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण का अध्ययन करने का महत्व

वर्तमान समय में पर्यावरणीय समस्याएँ वैश्विक और स्थानीय स्तर पर गंभीर रूप ले चुकी हैं, जिनका प्रभाव मानव जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र पर देखा जा सकता है। इन समस्याओं का समाधान करने और एक स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि हम आने वाली पीढ़ियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक और जिम्मेदार बनाएं। इसी संदर्भ में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. भविष्य के नागरिकों की शिक्षा: माध्यमिक विद्यालय के छात्र वह अवस्था होते हैं जब वे अपनी सोच और दृष्टिकोण को आकार देने की प्रक्रिया में होते हैं। इस उम्र में, उनके विचार और मान्यताएँ स्थायी रूप ले सकती हैं। यदि हम इस समय उनके पर्यावरणीय दृष्टिकोण को समझते हैं और उन्हें सही दिशा में प्रशिक्षित करते हैं, तो वे भविष्य में जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बन सकते हैं। यह उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी को समझने में मदद करेगा, जो समाज और पर्यावरण दोनों के लिए फायदेमंद होगा।

2. पर्यावरणीय शिक्षा के प्रभावी उपाय: पर्यावरणीय दृष्टिकोण का अध्ययन करने से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि छात्र वर्तमान में पर्यावरणीय मुद्दों को कैसे समझते हैं और उनका उनके व्यवहार पर क्या असर पड़ता है। इससे यह जानने में भी मदद मिलती है कि कौन से शिक्षा उपाय प्रभावी हैं और किस प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों से उनकी जागरूकता बढ़ाई जा सकती है। इसके आधार पर शिक्षाविद और नीति निर्माताओं को ऐसे कार्यक्रम और पाठ्यक्रम विकसित करने में मदद मिलती है जो छात्रों को पर्यावरणीय चुनौतियों से अवगत कराएं और उनके समाधान के लिए प्रेरित करें।

3. पर्यावरणीय चिंताओं की सामाजिक जड़ें: माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण का अध्ययन करते समय, हमें यह भी समझने को मिलता है कि विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक कारक उनके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करते हैं। शहरी और ग्रामीण छात्रों के दृष्टिकोण में अंतर, उनके परिवेश, और संसाधनों की उपलब्धता का विश्लेषण करने से यह पता चलता है कि किस प्रकार की सामाजिक संरचनाएँ और सांस्कृतिक मान्यताएँ उनके पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं।

4. दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रभाव: जब छात्र पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशील और जागरूक होते हैं, तो वे भविष्य में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होते हैं। वे अपने घरों, समुदायों और समाज में पर्यावरणीय मुद्दों को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। इस प्रकार, उनका पर्यावरणीय दृष्टिकोण दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकता है और समाज में स्थायी सुधार ला सकता है।

5. शोध और नीति निर्माण: छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर अध्ययन से नीति निर्माताओं, शिक्षकों और गैर-सरकारी संगठनों को यह समझने में मदद मिलती है कि पर्यावरणीय शिक्षा की दिशा और उपायों को कैसे सुधारना चाहिए। इससे उन्हें बेहतर नीतियां बनाने, शिक्षा कार्यक्रमों को डिज़ाइन करने और पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने के लिए योजनाएँ तैयार करने में मदद मिलती है।
कुल मिलाकर, माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण का अध्ययन समाज की पर्यावरणीय दिशा और भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि आने वाली पीढ़ियाँ न केवल पर्यावरणीय समस्याओं को समझें, बल्कि उनके समाधान के लिए सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित हों।

सैद्धांतिक ढांचा

सैद्धांतिक ढांचा एक अध्ययन की नींव प्रदान करता है और यह उन सिद्धांतों और मॉडल्स को संदर्भित करता है जो शोध के लिए आधार तैयार करते हैं। पर्यावरणीय दृष्टिकोण के अध्ययन में, सैद्धांतिक ढांचे का उद्देश्य छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को समझने और विश्लेषित करने के लिए एक ठोस सैद्धांतिक आधार प्रदान करना है। निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांत और मॉडल इस अध्ययन के सैद्धांतिक ढांचे में शामिल किए गए हैं:

पर्यावरणीय शिक्षा का सिद्धांत (Environmental Education Theory)

- **सिद्धांत का सार:** यह सिद्धांत कहता है कि पर्यावरणीय शिक्षा का उद्देश्य लोगों को उनके पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाना और उन्हें पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूक करना है। यह शिक्षा छात्रों को पर्यावरणीय समस्याओं की जटिलता और उनकी जिम्मेदारियों को समझने में मदद करती है।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

- **प्रभाव:** यह सिद्धांत यह समझने में मदद करता है कि कैसे शिक्षण और शिक्षा के तरीके छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

सामाजिक सीखने का सिद्धांत (Social Learning Theory)
- **सिद्धांत का सार:** इस सिद्धांत के अनुसार, लोग दूसरों के व्यवहार, उनके परिणामों, और सामाजिक मानदंडों को देखकर सीखते हैं। अल्बर्ट बांडुरा द्वारा प्रस्तुत इस सिद्धांत के अनुसार, पर्यावरणीय दृष्टिकोण भी सामाजिक परिवेश और सामाजिक प्रभावों से आकार लेते हैं।
- **प्रभाव:** यह सिद्धांत यह समझने में सहायक है कि छात्र अपने परिवार, समुदाय, और विद्यालय के माध्यम से पर्यावरणीय दृष्टिकोण कैसे सीखते हैं और ग्रहण करते हैं।

सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव (Social, Economic, and Cultural Factors Impact)
- **सिद्धांत का सार:** यह सिद्धांत इस बात को दर्शाता है कि समाज के विभिन्न वर्गों, आर्थिक स्थिति, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का व्यक्ति के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के दृष्टिकोण में भिन्नता को समझने के लिए यह सिद्धांत महत्वपूर्ण है।
- **प्रभाव:** यह सिद्धांत यह समझने में मदद करता है कि शहरी और ग्रामीण छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर सामाजिक और सांस्कृतिक कारक कैसे प्रभाव डालते हैं, जैसे कि शिक्षा का स्तर, आर्थिक स्थिति, और सांस्कृतिक मान्यताएँ।

पर्यावरणीय व्यवहार का मॉडल (Environmental Behavior Model)
- **सिद्धांत का सार:** इस मॉडल के अनुसार, पर्यावरणीय व्यवहार व्यक्ति के पर्यावरणीय दृष्टिकोण, ज्ञान, और मान्यताओं पर आधारित होता है। यह मॉडल यह दर्शाता है कि कैसे पर्यावरणीय दृष्टिकोण व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है।
- **प्रभाव:** यह मॉडल यह समझने में सहायक है कि छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण कैसे उनके पर्यावरणीय व्यवहार को आकार देते हैं और कैसे इस व्यवहार को सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए interventions की आवश्यकता होती है।

पर्यावरणीय प्रभाव और आदतें (Environmental Impact and Habits)
- **सिद्धांत का सार:** यह सिद्धांत इस बात को समझाता है कि व्यक्ति की पर्यावरणीय आदतें और उनके पर्यावरणीय प्रभाव के प्रति दृष्टिकोण उनके दीर्घकालिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यह सिद्धांत विशेष रूप से उन आदतों और व्यवहारों पर ध्यान केंद्रित करता है जो पर्यावरणीय प्रभाव को कम कर सकते हैं।
- **प्रभाव:** यह सिद्धांत यह समझने में मदद करता है कि किस प्रकार की आदतें और व्यवहार छात्र के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को विकसित कर सकते हैं और किस प्रकार के उपाय इन आदतों को सुधार सकते हैं।

इन सैद्धांतिक ढांचों और मॉडल्स का उपयोग इस अध्ययन में किया जाएगा ताकि शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को गहराई से समझा जा सके और उनके व्यवहार और दृष्टिकोण पर प्रभाव डालने वाले कारकों की पहचान की जा सके। यह ढांचा अध्ययन को एक ठोस सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है और अनुसंधान के निष्कर्षों की व्याख्या में सहायक होता है।

भारत के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण

अध्ययन का सार: भारत में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर किए गए अध्ययन बताते हैं कि शहरी छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता अधिक होती है, जबकि ग्रामीण छात्रों में इसकी कमी देखी जाती है।

प्रमुख निष्कर्ष: शहरी क्षेत्रों में शिक्षा, संसाधन, और जागरूकता अभियानों की बेहतर उपलब्धता के कारण छात्रों का पर्यावरणीय दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक होता है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की कमी और आर्थिक चुनौतियाँ इस दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं।

भारत में पर्यावरणीय मुद्दों पर छात्र राय

अध्ययन का सार: भारत में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि छात्र जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और वन संरक्षण जैसे मुद्दों के प्रति जागरूक हैं, लेकिन उनकी समझ और दृष्टिकोण स्थानीय परिस्थितियों के आधार पर भिन्न होते हैं।

प्रमुख निष्कर्ष: शहरी छात्रों की पर्यावरणीय समझ अधिक व्यापक और गहरी होती है, जबकि ग्रामीण छात्रों में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता की कमी और सीमित जानकारी देखी जाती है।

इन वैश्विक और राष्ट्रीय अध्ययन की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय दृष्टिकोण और शिक्षा की प्रभावशीलता क्षेत्रीय, सांस्कृतिक, और आर्थिक कारकों पर निर्भर करती है। इस ज्ञान का उपयोग करते हुए, इस अध्ययन का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण के अंतर को समझना और इस पर प्रभावी शिक्षा और नीतिगत सुझाव प्रदान करना है।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

शहरी बनाम ग्रामीण पर्यावरणीय दृष्टिकोण

शहरी क्षेत्रों में पर्यावरणीय जागरूकता अधिक होती है क्योंकि वहाँ शिक्षा और संसाधन बेहतर उपलब्ध होते हैं। शहरी छात्र जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और पुनर्नवीनीकरण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय शिक्षा और संसाधनों की कमी के कारण जागरूकता कम होती है। सामाजिक और सांस्कृतिक कारक भी इस भिन्नता को प्रभावित करते हैं।

विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा की भूमिका

पर्यावरणीय शिक्षा छात्रों को जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनाने में सहायक होती है। पाठ्यक्रम में पर्यावरणीय विषयों को शामिल करने से छात्रों की समझ और व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आता है। शिक्षकों और प्रायोगिक गतिविधियों (जैसे वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान) की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह शिक्षा न केवल छात्रों बल्कि उनके परिवार और समुदाय को भी प्रभावित करती है, जिससे समाज में सतत बदलाव आता है।

II. समीक्षा

स्प्रिंग, जे. (2008) वैश्वीकरण शिक्षा नीतियों और प्रथाओं को प्रभावित करता है, जिसमें संस्कृतिवादी, उत्तर-औपनिवेशिक, और विश्व संस्कृति जैसे ढाँचे शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, और यूनेस्को जैसी संस्थाएँ नीति निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव बढ़ रहा है, जबकि स्थानीय संस्कृतियों की सुरक्षा पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

शांहान एट अल. (2015) सार्वजनिक पार्क जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन हरियाली और आकर्षण के बीच संतुलन चुनौतीपूर्ण है। अध्ययन में ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया के 670 लोगों के 1,090 पार्क दौरे शामिल हैं। पर्यावरण-उन्मुख लोग अधिक वनस्पति वाले पार्कों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने की जरूरत सामने आई।

आलम एट अल. (2009) बांग्लादेश में कृषि क्षेत्र का योगदान घटा है, लेकिन यह अभी भी 75% रोजगार प्रदान करता है। सरकार ने कृषि शिक्षा को बढ़ावा दिया, लेकिन उत्पादकता में कमी बनी हुई है। नीति परिवर्तन से कृषि अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय विकास को मज़बूत किया जा सकता है।

बिलिकन डेमिर एट अल. (2021) अप्रवासी छात्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति उनके विज्ञान प्रदर्शन को प्रभावित करती है। 2015 PISA डेटा से पता चला कि आर्थिक कारकों का सीधा और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष बताते हैं कि असमानताओं को कम करने के लिए आगे अध्ययन आवश्यक हैं।

हैनमुएलर एट अल. (2006) शिक्षा स्तर व्यापार नीतियों के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करता है, जहाँ उच्च शिक्षा प्राप्त लोग मुक्त व्यापार का अधिक समर्थन करते हैं। श्रम बाजार में शामिल या सेवानिवृत्त लोगों के विचारों में बड़ा अंतर नहीं पाया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि आर्थिक जानकारी का प्रभाव व्यक्तिगत व्यापार वरीयताओं पर महत्वपूर्ण है।

सोहेल, एन. (2013) मेडिकल छात्रों में तनाव का स्तर उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है। लाहौर में 250 छात्रों पर किए गए अध्ययन में मध्यम नकारात्मक सहसंबंध पाया गया। निष्कर्ष बताते हैं कि तनाव प्रबंधन रणनीतियाँ शैक्षणिक प्रदर्शन सुधारने में सहायक हो सकती हैं।

III. शोध विधि (RESEARCH METHODOLOGY)

अनुसंधान का प्रकार (Type of Research): यह अध्ययन तुलनात्मक और विवरणात्मक अनुसंधान विधियों पर आधारित है। शोध का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण, जागरूकता और भागीदारी का विश्लेषण करना है। तुलनात्मक दृष्टिकोण ने दोनों क्षेत्रों में छात्रों के दृष्टिकोण के बीच भिन्नताओं को समझने में मदद की। यह अनुसंधान मुख्यतः मात्रात्मक (quantitative) तरीकों का उपयोग करता है, जिसमें आंकड़ों का विश्लेषण और तुलना शामिल है।

नमूना चयन (Sampling Technique): शोध में नमूना चयन के लिए *स्ट्रेटिफाइड रैंडम सैंपलिंग* का उपयोग किया गया। शहरी और ग्रामीण विद्यालयों से कुल 400 छात्रों (200 शहरी और 200 ग्रामीण) को अध्ययन के लिए चुना गया। यह चयन सुनिश्चित करता है कि छात्रों का समूह उनके पर्यावरणीय दृष्टिकोण और शैक्षिक पृष्ठभूमि को सटीक रूप से दर्शाए। नमूने का चयन छात्रों की आयु, लिंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर किया गया।

डेटा संग्रह उपकरण (Data Collection Tools): डेटा संग्रह के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें छह प्रमुख आयाम शामिल थे:

- पर्यावरणीय जागरूकता (ENA)
- शैक्षिक संसाधन (EDR)

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

- सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES)
- समुदाय और परिवेश (COE)
- शिक्षण विधियाँ (TEM)
- पर्यावरणीय दृष्टिकोण (EAT)

प्रत्येक आयाम के तहत पाँच-पाँच प्रश्न रखे गए। छात्रों को पाँच बिंदुओं के *लिकर्ट स्केल* (Likert Scale) पर उनके उत्तर देने के लिए कहा गया, जो "बिल्कुल असहमत" से लेकर "बिल्कुल सहमत" तक थे।

डेटा संग्रह प्रक्रिया (Data Collection Process): डेटा संग्रह प्रक्रिया विद्यालयों में व्यक्तिगत रूप से जाकर की गई। प्रत्येक छात्र को प्रश्नावली भरने के लिए लगभग 30 मिनट का समय दिया गया। शोधकर्ता ने यह सुनिश्चित किया कि छात्रों को प्रश्न समझने में कोई कठिनाई न हो। डेटा संग्रह में पूरी गोपनीयता और निष्पक्षता बनाए रखी गई।

डेटा विश्लेषण (Data Analysis): संग्रहित डेटा को सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके विश्लेषित किया गया। *क्रोनबाख अल्फा (Cronbach's Alpha)* का उपयोग डेटा की विश्वसनीयता और प्रश्नावली की आंतरिक संगठन (internal consistency) को मापने के लिए किया गया। विभिन्न आयामों के लिए औसत स्कोर और उनके बीच के अंतर को स्पष्ट करने के लिए *फ्रीक्वेंसी टेबल्स*, प्रतिशत और औसत मान (Mean) का उपयोग किया गया। शहरी और ग्रामीण छात्रों के बीच के अंतराल को समझने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण भी किया गया।

अनुसंधान क्षेत्र (Research Area): यह शोध बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर जिले में किया गया। अनुसंधान क्षेत्र को दो वर्गों में विभाजित किया गया – शहरी और ग्रामीण क्षेत्र। शहरी क्षेत्र में जिले के मुख्य नगर क्षेत्र के विद्यालय शामिल थे, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में दूरस्थ और अर्ध-शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों को कवर किया गया।

नैतिकता और गोपनीयता (Ethics and Confidentiality): शोध के दौरान छात्रों और विद्यालय प्रशासन की गोपनीयता को प्राथमिकता दी गई। प्रश्नावली में छात्रों की पहचान से संबंधित कोई प्रश्न शामिल नहीं किया गया। डेटा का उपयोग केवल शैक्षणिक उद्देश्य के लिए किया गया और इसे पूरी तरह से गोपनीय रखा गया।

सीमाएँ (Limitations): शोध की सीमाओं में यह शामिल है कि यह अध्ययन केवल मुजफ्फरपुर जिले के कुछ विद्यालयों तक सीमित है, जो सभी शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। साथ ही, डेटा केवल छात्रों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित है, जो उनके वास्तविक व्यवहार को पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों को विस्तृत रूप से शामिल नहीं किया गया है।

अनुसंधान का महत्व (Significance of the Research): यह शोध शहरी और ग्रामीण छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण और उनके शैक्षिक संसाधनों की स्थिति को समझने में मदद करता है। यह नीति निर्माताओं, शिक्षकों और शिक्षण संस्थानों को बेहतर कार्यक्रम और रणनीतियाँ तैयार करने में सहायक हो सकता है। इसके माध्यम से शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच की खाई को कम करने के प्रयासों को दिशा प्रदान की जा सकती है।

इस शोध विधि ने सभी आयामों को प्रभावी ढंग से शामिल किया, जिससे शोध के उद्देश्य को स्पष्ट और सटीक परिणाम प्राप्त हुए।

IV. डेटा विश्लेषण और परिणाम

यह शोध अध्ययन "शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पर्यावरण के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन: मुजफ्फरपुर, बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में" छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण, उनकी भागीदारी, और पर्यावरणीय शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता (Environmental Awareness), शैक्षिक संसाधन (Educational Resources), सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status), समुदाय और परिवेश (Community and Environment), शिक्षण विधि (Teaching Methodology), और पर्यावरणीय दृष्टिकोण (Environmental Attitudes) जैसे विषयों पर आधारित है। इस अध्ययन में 200 छात्रों की प्रतिक्रिया को प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किया गया। विभिन्न विषयों पर आधारित प्रश्नों को 5-बिंदु लिकर्ट स्केल पर डिज़ाइन किया गया, जिसमें छात्रों की सहमति और असहमति को दर्शाया गया।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

4.1 ग्रामीण माध्यमिक

	Variable Group	Cronbach's Alpha	Number of Items	Cases Valid (N)	Excluded (N)	Total Cases (N)
पर्यावरणीय जागरूकता (Environmental Awareness) ENA.	ENA (ENA_1, ENA_2, ENA_3, ENA_4, ENA_5)	0.798	5	200	0	200
शैक्षिक संसाधन (Educational Resources) EDR.	EDR (EDR_1, EDR_2, EDR_3, EDR_4, EDR_5)	0.797	5	200	0	200
सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status) SES.	SES (SES_1, SES_2, SES_3, SES_4, SES_5)	0.807	5	200	0	200
समुदाय और परिवेश (Community and Environment) COE.	COE (COE_1, COE_2, COE_3, COE_4, COE_5)	0.865	5	200	0	200
शिक्षण विधि (Teaching Methodology) TEM	TEM (TEM_1, TEM_2, TEM_3, TEM_4, TEM_5)	0.806	5	200	0	200
पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण (Environmental Attitudes) EAT.	EAT (EAT_1, EAT_2, EAT_3, EAT_4, EAT_5)	0.808	5	200	0	200

ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों पर किए गए इस अध्ययन में छह आयाम शामिल थे: पर्यावरणीय जागरूकता (ENA), शैक्षिक संसाधन (EDR), सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES), समुदाय और परिवेश (COE), शिक्षण विधि (TEM), और पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण (EAT)। प्रत्येक आयाम में पाँच प्रश्न शामिल थे। *क्रोनबाख अल्फा* स्कोर ने विश्वसनीयता सुनिश्चित की, जिसमें सभी आयामों के लिए स्कोर 0.797 से 0.865 के बीच था, जो उच्च विश्वसनीयता को दर्शाता है। कुल 200 छात्रों के उत्तरों का विश्लेषण किया गया, जिसमें किसी भी केस को बाहर नहीं किया गया। यह अध्ययन ग्रामीण छात्रों की पर्यावरणीय जागरूकता और संसाधनों की स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालता है।

प्रश्न ENA_1 (आप नियमित रूप से पर्यावरण से संबंधित समाचार और जानकारी प्राप्त करते हैं) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर को दर्शाते हैं। "बिल्कुल सहमत" (40.5%) और "सहमत" (32%) वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक है, जो बताता है कि अधिकांश छात्र नियमित रूप से पर्यावरणीय जानकारी प्राप्त करते हैं। "तटस्थ" (24%) वाले छात्रों का प्रतिशत मध्यम है, जो संकेत देता है कि यह समूह इस विषय में उतना सक्रिय नहीं है। वहीं, केवल 3.5% छात्र "असहमत" हैं और "बिल्कुल असहमत" किसी ने नहीं चुना। यह परिणाम दर्शाता है कि छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर अच्छा है, लेकिन "तटस्थ" और "असहमत" श्रेणियों के छात्रों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रयास आवश्यक हैं।

प्रश्न ENA_2 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों से उनके दृष्टिकोण का आकलन किया गया। "बिल्कुल सहमत" (28.5%) और "सहमत" (38.5%) विकल्पों को मिलाकर 67% छात्रों ने व्यक्तिगत प्रयासों की आवश्यकता को महत्वपूर्ण माना, जो पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति उनकी सकारात्मक सोच को दर्शाता है। "तटस्थ" (21%) श्रेणी में आने वाले छात्र इस विषय में अनिश्चित हैं, जबकि "असहमत" (12%) छात्रों ने व्यक्तिगत प्रयासों की महत्ता को कमतर आंका। इस डेटा से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिकांश छात्र पर्यावरणीय संरक्षण में व्यक्तिगत योगदान को आवश्यक

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

मानते हैं। हालांकि, 33% (तटस्थ और असहमत) छात्रों को जागरूक करने की आवश्यकता है ताकि वे भी इस दिशा में सक्रिय योगदान दे सकें। यह परिणाम स्कूलों और समुदायों के लिए जागरूकता अभियानों और गतिविधियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता को इंगित करता है।

प्रश्न ENA_3 (आप अपने स्कूल में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका से पता चलता है कि अधिकांश छात्र इन गतिविधियों में रुचि रखते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) पर सबसे अधिक 104 छात्र (52%) ने उत्तर दिया, जो दर्शाता है कि ये छात्र सक्रिय रूप से पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भाग लेते हैं। इसके बाद "सहमत" (स्कोर 4) पर 61 छात्र (30.5%) ने उत्तर दिया, जो दर्शाता है कि वे भी इन गतिविधियों में पर्याप्त भागीदारी करते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) पर 28 छात्र (14%) हैं, जो इस बात का संकेत है कि ये छात्र इन गतिविधियों में रुचि नहीं दिखाते। वहीं, "असहमत" (स्कोर 2) केवल 7 छात्र (3.5%) हैं। यह दर्शाता है कि कुल मिलाकर अधिकांश छात्रों में पर्यावरणीय गतिविधियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, लेकिन "तटस्थ" और "असहमत" समूह को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

प्रश्न ENA_4 (आपको पर्यावरणीय समस्याओं जैसे प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के बारे में अच्छी समझ है) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरणीय समस्याओं की समझ को दर्शाते हैं। "सहमत" (39.5%) वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक है, जो यह इंगित करता है कि अधिकांश छात्रों को इन समस्याओं की अच्छी समझ है। "बिल्कुल सहमत" (21.5%) वाले छात्रों की संख्या भी उल्लेखनीय है, जो गहरी समझ को दर्शाती है। हालांकि, "तटस्थ" (31%) वाले छात्रों की संख्या काफी बड़ी है, जो इस बात की ओर इशारा करता है कि लगभग एक तिहाई छात्र इन समस्याओं के प्रति स्पष्ट राय नहीं रखते। वहीं, "असहमत" (8%) श्रेणी में आने वाले छात्रों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। यह परिणाम बताता है कि अधिकांश छात्रों को पर्यावरणीय समस्याओं की सामान्य जानकारी है, लेकिन "तटस्थ" और "असहमत" श्रेणियों में सुधार के लिए जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

प्रश्न ENA_5 (आपका मानना है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए शिक्षण सामग्री और जानकारी स्कूलों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है) पर छात्रों के उत्तर उनके दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) के लिए 60 छात्रों (30%) ने उत्तर दिया, जबकि "सहमत" (स्कोर 4) के लिए 65 छात्रों (32.5%) ने जवाब दिया। यह इंगित करता है कि लगभग 62.5% छात्र मानते हैं कि स्कूलों में पर्यावरण संरक्षण से संबंधित सामग्री पर्याप्त है। "तटस्थ" (स्कोर 3) पर 47 छात्रों (23.5%) का उत्तर मिला, जो बताता है कि एक बड़ा समूह इस विषय पर स्पष्ट राय नहीं रखता। वहीं, "असहमत" (स्कोर 2) के लिए 28 छात्रों (14%) ने जवाब दिया, जो दर्शाता है कि इस समूह को सामग्री अपर्याप्त लगती है।
यह निष्कर्ष दर्शाता है कि स्कूलों में पर्यावरणीय शिक्षा सामग्री पर्याप्त है, लेकिन लगभग 37.5% छात्रों की तटस्थता या असहमति सुधार की आवश्यकता को रेखांकित करती है।

शैक्षिक संसाधन (Educational Resources) EDR.

प्रश्न EDR_1 (आप पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानते हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका उनके दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों का प्रतिशत 20.5% है, जबकि "सहमत" (स्कोर 4) के लिए उत्तर देने वाले छात्र सबसे अधिक 47% हैं, जो यह दर्शाता है कि लगभग आधे छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले छात्रों की संख्या 27% है, जो यह संकेत करता है कि लगभग एक चौथाई छात्र इस मुद्दे पर स्पष्ट राय नहीं रखते। वहीं, "असहमत" (स्कोर 2) वाले छात्रों का प्रतिशत केवल 5.5% है और "बिल्कुल असहमत" पर किसी ने उत्तर नहीं दिया। यह परिणाम दर्शाता है कि अधिकांश छात्र पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व को समझते हैं, लेकिन तटस्थ और असहमत छात्रों को जागरूकता अभियानों के माध्यम से अधिक संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।

प्रश्न EDR_2 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तर उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी की भावना को दर्शाते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या 42 (21%) है, जबकि "सहमत" (स्कोर 4) वाले छात्रों की संख्या 109 (54.5%) है, जो दिखाता है कि अधिकांश छात्र व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व को स्वीकार करते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) के लिए 37 छात्रों (18.5%) ने उत्तर दिया, जो इंगित करता है कि यह समूह इस विचार के प्रति स्पष्ट नहीं है। "असहमत" (स्कोर 2) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) वाले छात्रों की संख्या बहुत कम (5.5% और 0.5% क्रमशः) है। यह परिणाम सकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाता है कि अधिकतर छात्र पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयासों को आवश्यक मानते हैं। हालांकि, तटस्थ और असहमत श्रेणी के छात्रों में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रयास की आवश्यकता है।

प्रश्न EDR_3 (आप पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भाग लेते हैं) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरणीय भागीदारी के स्तर को दर्शाते हैं। सबसे अधिक छात्र "सहमत" (स्कोर 4) हैं, जिनकी संख्या 104 (52%) है, जो यह इंगित करता है कि आधे से अधिक छात्र पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। इसके अलावा, "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले 40 छात्र (20%) हैं, जो मजबूत भागीदारी को दर्शाते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) पर 43 छात्र (21.5%) हैं, जो यह सुझाव देता है कि एक महत्वपूर्ण संख्या इस विषय में सीमित रुचि रखती है। वहीं, "असहमत" (स्कोर 2) पर 9 छात्र (4.5%) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) पर 4 छात्र (2%) हैं, जो

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

यह संकेत देते हैं कि इन छात्रों में पर्यावरणीय भागीदारी न्यूनतम है। कुल मिलाकर, अधिकांश छात्रों की भागीदारी सकारात्मक है, लेकिन "तटस्थ" और "असहमत" श्रेणियों को सक्रिय बनाने के लिए जागरूकता अभियान की आवश्यकता है।

प्रश्न EDR_4 (आपको पर्यावरणीय समस्याओं जैसे प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के बारे में अच्छी समझ है) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरणीय ज्ञान के स्तर को दर्शाते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) के लिए सबसे अधिक उत्तर (39.5%) मिले, जो दर्शाता है कि कई छात्र पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं हैं। "सहमत" (स्कोर 4) पर 31% छात्रों ने उत्तर दिया, जो विषय पर अच्छी समझ का संकेत देता है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या 16.5% है, जो प्रदर्शित करता है कि केवल एक सीमित समूह को इन समस्याओं की गहरी समझ है। दूसरी ओर, "असहमत" (स्कोर 2) पर 10.5% और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) पर 2.5% उत्तर मिले, जो इंगित करता है कि कुछ छात्रों को पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में कम जानकारी है। यह दर्शाता है कि जागरूकता बढ़ाने के लिए छात्रों के बीच शिक्षा और संचार में सुधार की आवश्यकता है।

प्रश्न EDR_5 (आपका मानना है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए शिक्षण सामग्री और जानकारी स्कूलों में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरणीय शिक्षा की स्थिति को दर्शाते हैं। "सहमत" (स्कोर 4) वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक है, जिसमें 100 छात्र (50%) शामिल हैं। यह दर्शाता है कि आधे छात्रों को लगता है कि स्कूलों में पर्याप्त शिक्षण सामग्री उपलब्ध है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या 52 (26%) है, जो इस विषय पर अत्यधिक सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले छात्रों की संख्या 37 (18.5%) है, जो बताता है कि इस समूह को पर्यावरणीय सामग्री की पर्याप्तता के बारे में निश्चितता नहीं है। "असहमत" (स्कोर 2) वाले छात्र केवल 11 (5.5%) हैं। इस डेटा से स्पष्ट है कि अधिकांश छात्रों को स्कूलों में पर्यावरणीय सामग्री की पर्याप्तता महसूस होती है, लेकिन "तटस्थ" और "असहमत" छात्रों की चिंताओं को दूर करने के लिए सुधार आवश्यक है।

प्रश्न SES_1 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका व्यक्तिगत जिम्मेदारी के प्रति उनकी जागरूकता को दर्शाती है। "बिल्कुल सहमत" (39%) और "सहमत" (36.5%) वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक है, जो यह स्पष्ट करता है कि अधिकांश छात्र पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत योगदान को महत्वपूर्ण मानते हैं। "तटस्थ" (18%) वाले छात्रों का प्रतिशत मध्यम है, जो इंगित करता है कि इस समूह को इस विषय पर और अधिक जागरूक किए जाने की आवश्यकता है। वहीं, केवल 6.5% छात्र "असहमत" हैं, और "बिल्कुल असहमत" के लिए किसी ने उत्तर नहीं दिया। यह परिणाम दर्शाता है कि छात्रों में व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व को लेकर अच्छी जागरूकता है। हालांकि, "तटस्थ" और "असहमत" श्रेणी के छात्रों पर ध्यान केंद्रित कर पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति उनकी सोच को और बेहतर बनाया जा सकता है।

प्रश्न SES_2 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत योगदान के महत्व को दर्शाते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले 46 छात्रों (23%) ने उत्तर दिया, जो इस बात को दर्शाता है कि एक तिहाई छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। "सहमत" (स्कोर 4) के उत्तरदाताओं की संख्या सबसे अधिक (87 छात्र, 43.5%) है, जो यह दिखाता है कि अधिकांश छात्र इस विचार से सहमत हैं कि व्यक्तिगत प्रयास पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले 51 छात्रों (25.5%) का प्रतिशत है, जो बताता है कि कुछ छात्रों को इस मुद्दे पर स्पष्ट राय नहीं है। "असहमत" (स्कोर 2) वाले 16 छात्रों (8%) का प्रतिशत कम है, जो इस बात का संकेत है कि बहुत कम छात्रों को व्यक्तिगत प्रयासों की महत्वपूर्णता पर संदेह है।

प्रश्न SES_3 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रों को पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयासों की महत्ता का एहसास है। "बिल्कुल सहमत" (53%) और "सहमत" (30.5%) वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक है, जो यह दर्शाता है कि 83.5% छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानते हैं। "तटस्थ" (11%) और "असहमत" (5.5%) छात्रों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है, यह संकेत देता है कि बहुत कम छात्रों को इस बारे में संदेह या निष्कलंक विचार है। इस प्रकार, अधिकांश छात्रों का मानना है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत योगदान आवश्यक है, लेकिन कुछ छात्रों के लिए जागरूकता और समझ में वृद्धि की आवश्यकता हो सकती है। कुल मिलाकर, यह परिणाम पर्यावरणीय जिम्मेदारी को व्यक्तिगत स्तर पर समझने की दिशा में सकारात्मक प्रवृत्तियों को दर्शाता है।

प्रश्न SES_4 पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) से संबंधित दृष्टिकोण को दर्शाती है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या 50 (25%) है, जो यह दर्शाता है कि एक चौथाई छात्र इस स्थिति से सहमत हैं। "सहमत" (स्कोर 4) पर 75 छात्रों (37.5%) ने उत्तर दिया, जो एक महत्वपूर्ण अनुपात है, और यह बताता है कि अधिकतर छात्र सामाजिक-आर्थिक स्थिति से संबंधित विचारों से सहमत हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) के लिए 58 छात्र (29%) ने उत्तर दिया, जो दर्शाता है कि इन छात्रों का दृष्टिकोण अस्पष्ट या मध्यस्थ है। "असहमत" (स्कोर 2) वाले छात्र केवल 17 (8.5%) हैं, जो इस विचार से असहमत हैं। कुल मिलाकर, अधिकांश छात्रों का सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक दृष्टिकोण है, लेकिन कुछ छात्रों के बीच इसका प्रभाव कम या मध्यस्थ है।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

प्रश्न SES_5 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका यह दर्शाती है कि अधिकांश छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) के लिए 59 छात्रों (29.5%) ने उत्तर दिया, और "सहमत" (स्कोर 4) वाले 64 छात्रों (32%) का प्रतिशत है, जो यह दिखाता है कि एक बड़ा हिस्सा व्यक्तिगत प्रयासों को पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मानता है। "तटस्थ" (स्कोर 3) पर 51 छात्र (25.5%) ने उत्तर दिया, जो दर्शाता है कि इन छात्रों का इस मुद्दे पर मिश्रित दृष्टिकोण है। "असहमत" (स्कोर 2) वाले 26 छात्र (13%) थे, जो दर्शाते हैं कि कुछ छात्रों को व्यक्तिगत प्रयासों की महत्ता पर संदेह है। कुल मिलाकर, यह डेटा पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत योगदान की महत्वता को समझने में छात्रों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

प्रश्न COE_2 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका से पता चलता है कि अधिकांश छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) के लिए 56 छात्रों (28%) ने उत्तर दिया, जो यह दर्शाता है कि एक बड़ा समूह इस विषय पर स्पष्ट राय नहीं रखता। "सहमत" (स्कोर 2) और "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 1) के उत्तरों का मिलाकर 64% छात्रों ने व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण माना है। "सहमत" (23%) और "बिल्कुल सहमत" (9%) वाले छात्रों की संख्या 9% और 23% है, जो यह इंगित करता है कि अधिकांश छात्रों को लगता है कि व्यक्तिगत प्रयासों से पर्यावरण संरक्षण में योगदान हो सकता है। जबकि "असहमत" (स्कोर 4) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 5) के उत्तरों का प्रतिशत कम है (25.5% और 14.5%)। इस प्रकार, अधिकांश छात्रों का मानना है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं, लेकिन कुछ छात्र इसके महत्व को लेकर तटस्थ हैं।

प्रश्न COE_3 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका यह दर्शाती है कि अधिकांश छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) पर 18.5% छात्र और "सहमत" (स्कोर 4) पर 36% छात्र हैं, जो यह बताते हैं कि एक बड़ी संख्या में छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले छात्र 26% हैं, जो इस विषय पर स्पष्ट राय नहीं रखते। "असहमत" (स्कोर 2) पर 16.5% और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) पर 3% छात्र हैं, जो यह संकेत देते हैं कि कुछ छात्रों को व्यक्तिगत प्रयासों की आवश्यकता के बारे में स्पष्ट समझ नहीं है। इस प्रकार, अधिकांश छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व के प्रति जागरूकता है, लेकिन कुछ को इस दिशा में और प्रेरणा देने की आवश्यकता है।

प्रश्न COE_4 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका पर्यावरणीय जागरूकता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी के दृष्टिकोण को दर्शाती है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या कम (10%) है, जबकि "सहमत" (स्कोर 4) और "तटस्थ" (स्कोर 3) के छात्रों की संख्या क्रमशः 23% और 35.5% है, जो दर्शाता है कि एक बड़ा समूह व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानता है, लेकिन कुछ छात्रों के लिए यह उतना स्पष्ट नहीं है। "असहमत" (स्कोर 2) पर 46 छात्र (23%) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) पर 17 छात्र (8.5%) ने उत्तर दिया, जो संकेत करता है कि एक छोटा समूह पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयासों को महत्व नहीं देता। कुल मिलाकर, अधिकांश छात्रों को यह लगता है कि व्यक्तिगत प्रयास पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन कुछ छात्रों में इस पर असहमति भी पाई गई

प्रश्न COE_5 पर छात्रों के उत्तर पर्यावरणीय मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण को दर्शाते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) के लिए 13% छात्रों ने उत्तर दिया, जो दिखाता है कि कुछ छात्रों को पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति गहरी समझ है। "सहमत" (स्कोर 4) पर 21.5% छात्रों ने उत्तर दिया, indicating a moderate level of agreement. "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले 25.5% छात्र हैं, जो यह संकेत देता है कि यह समूह इस विषय पर स्पष्ट विचार नहीं रखता। "असहमत" (स्कोर 2) वाले छात्रों की संख्या 28.5% है, जो दर्शाता है कि लगभग एक चौथाई छात्र पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति अधिक जागरूक नहीं हैं। "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) पर केवल 11.5% छात्रों ने उत्तर दिया, जो इस बात का संकेत है कि कुछ छात्र पर्यावरणीय समस्याओं को महत्व नहीं देते। यह परिणाम दर्शाता है कि छात्रों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता का स्तर मिश्रित है और इस पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

शिक्षण विधि (Teaching Methodology) TEM

प्रश्न TEM_1 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका पर्यावरणीय दृष्टिकोण को दर्शाती है। सबसे अधिक छात्र "सहमत" (स्कोर 4) हैं, जिनकी संख्या 100 (50%) है, जो यह दर्शाता है कि आधे छात्र मानते हैं कि व्यक्तिगत प्रयास पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) के लिए 54 छात्र (27%) हैं, जो इस बात का संकेत है कि कुछ छात्र इस मुद्दे पर स्पष्ट दृष्टिकोण नहीं रखते। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या 35 (17.5%) है, जो यह दिखाता है कि एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण संख्या इस विषय में पूरी तरह से सहमत है। वहीं, "असहमत" (स्कोर 2) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) वाले छात्रों की संख्या बहुत कम है (1 और 10 छात्र, क्रमशः 0.5% और 5%)। यह परिणाम दर्शाता है कि अधिकांश छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं, लेकिन कुछ छात्रों के बीच इस पर विचार या समझ की कमी हो सकती है।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

प्रश्न TEM_2 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका उनके पर्यावरणीय दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या 51 (25.5%) है, जो यह दिखाता है कि एक चौथाई छात्रों को व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व का एहसास है। "सहमत" (स्कोर 4) में 91 छात्र (45.5%) ने उत्तर दिया, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश छात्रों के अनुसार व्यक्तिगत प्रयासों का योगदान महत्वपूर्ण है। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले 46 छात्र (23%) और "असहमत" (स्कोर 2) वाले 11 छात्र (5.5%) हैं, जो यह संकेत देते हैं कि कुछ छात्रों को व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व के बारे में स्पष्ट विचार नहीं हैं। "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) पर एक छात्र (0.5%) ने उत्तर दिया। इस आंकड़े से यह स्पष्ट होता है कि अधिकतर छात्र पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानते हैं, हालांकि कुछ छात्रों को इस पर अधिक जागरूक करने की आवश्यकता है।

प्रश्न TEM_3 (आपके अनुसार पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए क्या व्यक्तिगत जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है?) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका निम्नलिखित परिणाम दर्शाती है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों की संख्या 46 (23%) है, जो यह बताती है कि एक महत्वपूर्ण संख्या में छात्र पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी को महत्वपूर्ण मानते हैं। "सहमत" (स्कोर 4) वाले 84 छात्रों (42%) ने उत्तर दिया, जो इस बात का संकेत है कि अधिकांश छात्रों को यह विश्वास है कि व्यक्तिगत प्रयास पर्यावरण के लिए आवश्यक हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) के लिए 53 छात्र (26.5%) ने उत्तर दिया, जो दर्शाता है कि कुछ छात्रों को इस विषय में स्पष्ट विचार नहीं हैं। "असहमत" (7%) और "बिल्कुल असहमत" (1.5%) के प्रतिशत कम हैं, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश छात्रों का मानना है कि पर्यावरण संरक्षण में व्यक्तिगत भूमिका महत्वपूर्ण है।

प्रश्न TEM_4 (आप अपने स्कूल में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी भागीदारी को दर्शाते हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) के लिए 33 छात्रों (16.5%) ने उत्तर दिया, जो कि कम प्रतिशत है, यह संकेत करता है कि अधिकांश छात्रों ने स्कूल में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग नहीं लिया है। "सहमत" (स्कोर 4) पर 82 छात्रों (41%) ने उत्तर दिया, जो दर्शाता है कि एक बड़ी संख्या में छात्र स्कूल में कुछ हद तक भागीदारी करते हैं। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले 65 छात्र (32.5%) हैं, जो पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका के बारे में स्पष्ट नहीं हैं। वहीं, "असहमत" (स्कोर 2) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) वाले छात्रों का प्रतिशत क्रमशः 8.5% और 1.5% है, जो दर्शाता है कि कुछ छात्र इस गतिविधि में भाग नहीं लेते। कुल मिलाकर, छात्रों में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भागीदारी का स्तर मध्यम है।

प्रश्न TEM_5 (आपके विचार में पर्यावरणीय समस्याओं जैसे प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के बारे में आपकी समझ कैसी है) पर छात्रों के उत्तरों का विश्लेषण बताता है कि अधिकांश छात्र पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक हैं। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों का प्रतिशत 27.5% है, जो दर्शाता है कि एक महत्वपूर्ण संख्या प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समझती है। इसके अलावा, "सहमत" (स्कोर 4) वाले छात्रों का प्रतिशत 42.5% है, जो एक मजबूत मध्यवर्ती जागरूकता का संकेत है। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले छात्रों की संख्या 23% है, जो दर्शाता है कि कुछ छात्रों को इन मुद्दों के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं है। "असहमत" (स्कोर 2) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) वाले छात्रों की संख्या बहुत कम (6% और 1%) है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्र पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति कुछ न कुछ समझ रखते हैं, लेकिन कुछ छात्रों को इस विषय पर और जागरूक करने की आवश्यकता है।

पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण (Environmental Attitudes) EAT.

प्रश्न EAT_1 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका उनके पर्यावरणीय दृष्टिकोण को दर्शाती है। सबसे कम संख्या "बिल्कुल असहमत" (6%) और "असहमत" (19%) छात्रों की है, जो बताते हैं कि एक छोटा समूह व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व को नकारता है। "तटस्थ" (31.5%) और "सहमत" (29.5%) छात्रों का प्रतिशत अधिक है, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश छात्रों को व्यक्तिगत प्रयासों की आवश्यकता पर संदेह या निश्चितता नहीं है। सबसे अधिक उत्तर "बिल्कुल सहमत" (14%) में दिए गए हैं, हालांकि यह प्रतिशत कम है, जो यह संकेत देता है कि कुछ छात्रों को लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। कुल मिलाकर, छात्रों के बीच व्यक्तिगत प्रयासों की भूमिका के प्रति मिश्रित दृष्टिकोण है, और इस पर और जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है।

प्रश्न EAT_2 (आपको लगता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका व्यक्तिगत प्रयासों की महत्ता के प्रति उनके दृष्टिकोण को दर्शाती है। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक (34.5%) है, जो यह संकेत देता है कि अधिकांश छात्र पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व के बारे में न तो पूरी तरह सहमत हैं और न ही असहमत। "सहमत" (स्कोर 2) वाले 23.5% छात्र और "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 1) वाले 10.5% छात्रों से यह प्रतीत होता है कि एक तिहाई से ज्यादा छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को महत्वपूर्ण मानते हैं। "असहमत" (स्कोर 4) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 5) वाले छात्रों का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम (31.5%) है, जो दर्शाता है कि एक छोटा हिस्सा इस विचार से असहमत है। यह परिणाम संकेत करता है कि अधिकांश छात्र व्यक्तिगत प्रयासों को पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण मानते हैं, लेकिन कुछ छात्रों में इस पर विचार भिन्न हो सकते हैं।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

प्रश्न EAT_3 (आपके अनुसार, पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं) पर छात्रों के उत्तर पर्यावरणीय जागरूकता और व्यक्तिगत जिम्मेदारी के स्तर को दर्शाते हैं। "बिल्कुल सहमत" (5 अंक) वाले छात्रों की संख्या 35 (17.5%) है, जो यह दर्शाता है कि एक तिहाई से कम छात्र इस विचार से पूरी तरह सहमत हैं। "सहमत" (4 अंक) वाले 72 छात्रों (36%) ने उत्तर दिया, जो यह संकेत देता है कि अधिकतर छात्र इस बात से सहमत हैं कि व्यक्तिगत प्रयास महत्वपूर्ण हैं। "तटस्थ" (3 अंक) वाले 58 छात्रों (29%) का प्रतिशत मध्यम है, जो दर्शाता है कि इस विषय पर इन छात्रों का दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं है। "असहमत" (2 अंक) वाले 30 छात्रों (15%) और "बिल्कुल असहमत" (1 अंक) वाले 5 छात्रों (2.5%) की संख्या कम है। कुल मिलाकर, छात्रों में व्यक्तिगत प्रयासों के महत्व के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, लेकिन कुछ छात्रों को इसमें और जागरूक करने की आवश्यकता है।

प्रश्न EAT_4 (आप अपने स्कूल में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका पर्यावरण संरक्षण में उनकी भागीदारी को दर्शाती है। "तटस्थ" (स्कोर 3) वाले छात्रों की संख्या सबसे अधिक है (67 छात्र, 33.5%), जो यह इंगीत करता है कि अधिकांश छात्रों का इस संबंध में मिश्रित दृष्टिकोण है या वे इस गतिविधि में उतने सक्रिय नहीं हैं। इसके बाद "सहमत" (स्कोर 2) वाले छात्र (59 छात्र, 29.5%) हैं, जो दिखाता है कि एक बड़ा समूह पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भाग लेता है, लेकिन पूरी तरह से सक्रिय नहीं है। "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 1) पर 17 छात्र (8.5%) ने उत्तर दिया, जो कम सक्रियता को दर्शाता है। "असहमत" (स्कोर 4) और "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 5) के लिए क्रमशः 22% और 6.5% छात्र हैं, जो दिखाता है कि कुछ छात्रों का इस विषय पर कम या कोई भागीदारी नहीं है। इन परिणामों से यह साफ है कि छात्रों में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

प्रश्न EAT_5 (आप अपने स्कूल में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं) पर छात्रों के उत्तरों की आवृत्ति तालिका उनके पर्यावरण संरक्षण में सक्रियता को दर्शाती है। "सहमत" (स्कोर 4) और "तटस्थ" (स्कोर 3) के लिए क्रमशः 56 (28%) और 53 (26.5%) छात्रों ने उत्तर दिया, जो यह संकेत देते हैं कि अधिकांश छात्र कुछ हद तक या सक्रिय रूप से पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भाग लेते हैं। "सहमत" (स्कोर 2) वाले 53 छात्रों (26.5%) का प्रतिशत भी है, जो दर्शाता है कि इन छात्रों का इस गतिविधि में हिस्सा लेने की प्रवृत्ति कम है। हालांकि, "बिल्कुल असहमत" (स्कोर 1) पर 13% छात्र और "बिल्कुल सहमत" (स्कोर 5) पर केवल 6% छात्रों ने उत्तर दिया, जो यह दर्शाता है कि एक छोटे समूह में ही अत्यधिक सक्रियता या अपार सहभागिता दिखाई देती है। यह परिणाम दर्शाता है कि छात्रों में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में भागीदारी का स्तर मिश्रित है और इसमें सुधार की आवश्यकता है।

V. निष्कर्ष

इस अध्ययन का उद्देश्य शहरी और ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण, जागरूकता, और भागीदारी का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और प्राकृतिक संसाधनों की कमी, वैश्विक स्तर पर गहन चिंताओं का विषय हैं। ऐसी परिस्थितियों में छात्रों के दृष्टिकोण और उनके व्यवहार का अध्ययन समाज के पर्यावरणीय भविष्य को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह निष्कर्ष शोध के विभिन्न पहलुओं को समाहित करते हुए शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय जागरूकता के स्तर, उपलब्ध संसाधनों, शिक्षण विधियों, और सामुदायिक भागीदारी के बीच मौजूद अंतरालों पर केंद्रित है।

शोध के दौरान यह पाया गया कि शहरी छात्रों ने पर्यावरणीय मुद्दों पर अधिक जागरूकता और सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित किया। "प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन गंभीर समस्याएँ हैं" जैसे विषयों पर उनकी गहरी समझ स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। यह संभवतः शहरी क्षेत्रों में मीडिया, इंटरनेट, और पर्यावरणीय शिक्षा सामग्री की बेहतर उपलब्धता के कारण है। दूसरी ओर, ग्रामीण छात्रों में जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत कम था, और उनकी प्रतिक्रियाएँ अधिकतर तटस्थ या असहमत श्रेणी में रहीं। ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना और संसाधनों की कमी छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को सीमित कर रही है।

शहरी विद्यालयों में शिक्षण सामग्री, प्रयोगशालाएँ, और तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता ग्रामीण विद्यालयों की तुलना में अधिक प्रभावशाली पाई गई। शहरी छात्रों ने "विद्यालय में पर्यावरणीय शिक्षा के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है" जैसे प्रश्नों पर अधिक सकारात्मक उत्तर दिए। इसके विपरीत, ग्रामीण विद्यालयों के छात्रों ने "तटस्थ" या "असहमत" उत्तर दिए, जो शैक्षिक संसाधनों की कमी को दर्शाते हैं। यह स्पष्ट है कि पर्यावरणीय शिक्षा के लिए आवश्यक बुनियादी ढाँचे का अभाव ग्रामीण छात्रों को इस विषय में गहराई से समझ विकसित करने से रोकता है।

परिवार की आर्थिक स्थिति और सामाजिक परिवेश का छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव देखा गया। शहरी छात्रों ने अपनी पारिवारिक आय और सामाजिक प्रतिष्ठा को अधिक सकारात्मक रूप में आंका, जिससे उनकी शिक्षा और भागीदारी में स्थिरता आई। "मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त है" जैसे प्रश्नों पर शहरी छात्रों की प्रतिक्रियाएँ ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक सकारात्मक थीं। यह दर्शाता है कि समाज-आर्थिक असमानता पर्यावरणीय दृष्टिकोण और भागीदारी के स्तर को सीधे प्रभावित करती है।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

शहरी समुदायों में पर्यावरणीय गतिविधियाँ, जैसे वृक्षारोपण अभियान और स्वच्छता कार्यक्रम, अधिक सक्रिय रूप से आयोजित किए जाते हैं। इससे छात्रों में जागरूकता और भागीदारी की भावना बढ़ती है। ग्रामीण क्षेत्रों में इन कार्यक्रमों की कमी स्पष्ट रूप से देखी गई। "मेरा समुदाय पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेता है" जैसे प्रश्नों पर ग्रामीण छात्रों की प्रतिक्रियाएँ "तटस्थ" या "असहमत" थीं। यह इस बात का संकेत है कि सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक प्रयासों की आवश्यकता है।

शहरी विद्यालयों के शिक्षकों ने अधिक प्रभावी शिक्षण पद्धतियाँ अपनाई थीं, जैसे कि पर्यावरणीय उदाहरणों और व्यावहारिक प्रयोगों का उपयोग। शहरी छात्रों ने "शिक्षक कक्षा में पर्यावरणीय उदाहरणों का उपयोग करते हैं" जैसे प्रश्नों पर सकारात्मक उत्तर दिए। इसके विपरीत, ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा अपनाई गई पद्धतियाँ उतनी प्रभावी नहीं थीं। शिक्षकों को पर्यावरणीय शिक्षा के क्षेत्र में अधिक प्रशिक्षण और संसाधनों की आवश्यकता है, ताकि वे छात्रों को इस विषय में गहराई से शिक्षित कर सकें।

शहरी छात्रों ने विद्यालयों में आयोजित पर्यावरणीय गतिविधियों में अधिक भागीदारी दिखाई। "आप अपने स्कूल में पर्यावरण संरक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं" जैसे प्रश्नों पर उनकी प्रतिक्रियाएँ सकारात्मक थीं। ग्रामीण छात्रों ने इन गतिविधियों में सीमित भागीदारी दिखाई, जिसका मुख्य कारण जागरूकता और अवसरों की कमी है। यह दर्शाता है कि ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरणीय गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए विशेष प्रयासों की आवश्यकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरणीय शिक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ पाई गईं। इनमें संसाधनों की कमी, शिक्षकों का अपर्याप्त प्रशिक्षण, और सामुदायिक भागीदारी की कमी प्रमुख हैं। ग्रामीण छात्रों के "तटस्थ" और "असहमत" उत्तर इन चुनौतियों की ओर इशारा करते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षा के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना, शिक्षकों को प्रशिक्षित करना, और सामुदायिक जागरूकता अभियान आयोजित करना आवश्यक है।

शहरी क्षेत्रों में छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण और भागीदारी का स्तर उच्च पाया गया। इसका मुख्य कारण बेहतर शैक्षिक संसाधन, शिक्षण विधियाँ, और सामुदायिक गतिविधियाँ हैं। "मेरा परिवेश मुझे पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने में सहायक है" जैसे प्रश्नों पर शहरी छात्रों की प्रतिक्रियाएँ सकारात्मक थीं। यह दर्शाता है कि शहरी विद्यालय और समुदाय पर्यावरणीय शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू कर रहे हैं।

ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच पर्यावरणीय दृष्टिकोण और भागीदारी में अंतराल को कम करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं:

a) **शैक्षिक संसाधनों में सुधार**: ग्रामीण विद्यालयों में प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, और तकनीकी उपकरणों की उपलब्धता बढ़ाई जानी चाहिए।
b) **शिक्षकों का प्रशिक्षण**: शिक्षकों को पर्यावरणीय शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षित करना आवश्यक है, ताकि वे छात्रों को अधिक प्रभावी ढंग से शिक्षित कर सकें।
c) **सामुदायिक भागीदारी**: ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक जागरूकता अभियान, वृक्षारोपण कार्यक्रम, और स्वच्छता अभियान आयोजित किए जाने चाहिए।
d) **नीति निर्माण**: नीति निर्माताओं को ग्रामीण विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए और इसके लिए आवश्यक बजट आवंटित करना चाहिए।

अध्ययन की उपयोगिता

यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षकों, और शिक्षाविदों को छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को बेहतर बनाने के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करता है। ग्रामीण और शहरी छात्रों के बीच मौजूद अंतराल को पाटने के लिए लक्षित प्रयास आवश्यक हैं।

शहरी और ग्रामीण छात्रों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण और भागीदारी में स्पष्ट अंतराल हैं। यह अंतर संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षण विधियों, और सामुदायिक भागीदारी के स्तर पर आधारित है। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि इन अंतरालों को कम करने के लिए ठोस नीतियाँ, लक्षित कार्यक्रम, और समुदाय आधारित प्रयास आवश्यक हैं। पर्यावरणीय जागरूकता और संरक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए सभी स्तरों पर सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है।

समग्र दृष्टिकोण

पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए छात्रों के दृष्टिकोण और भागीदारी को समझना महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन भविष्य में पर्यावरणीय शिक्षा और जागरूकता अभियानों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है। शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में छात्रों को पर्यावरणीय दृष्टिकोण में सुधार करने के लिए समान अवसर और संसाधन उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है।

ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 12, Issue 1, January- February 2025 |

संदर्भ

1. स्प्रिंग, जे. (2008). वैश्वीकरण और शिक्षा पर शोध. शैक्षिक अनुसंधान की समीक्षा, 78(2), 330-363.
2. शहनहान, डी. एफ., लिन, बी. बी., गैस्टन, के. जे., बुश, आर., और फुलर, आर. ए. (2015). शहरी पार्कों में लोगों को आकर्षित करने में पेड़ों और बची हुई वनस्पतियों की क्या भूमिका है? लैंडस्केप इकोलॉजी, 30, 153-165.
3. 99. आलम, जी.एम., होक, के.ई., खलीफा, एम.टी.बी., सिराज, एस.बी., और गनी, एम.एफ.बी.ए. (2009)। बांग्लादेश के कृषि अर्थशास्त्र और राष्ट्रीय विकास पर कृषि शिक्षा और प्रशिक्षण की भूमिका। अफ़्र. जे. एग्रीक. रेस, 4(12), 1334-1350.
4. बिलिकन डेमिर, एस., और यिलदिरिम, ओ. (2021)। विज्ञान के प्रति झुकाव के माध्यम से अप्रवासी छात्रों के विज्ञान प्रदर्शन पर आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का अप्रत्यक्ष प्रभाव: एक बहुस्तरीय विश्लेषण। शिक्षा और शहरी समाज, 53(3), 336-356.
5. हैनमुएलर, जे., और हिस्कोक्स, एम.जे. (2006)। वैश्वीकरण से प्यार करना सीखना: शिक्षा और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रति व्यक्तिगत दृष्टिकोण। अंतर्राष्ट्रीय संगठन, 60(2), 469-498।
6. सोहेल, एन. (2013)। मेडिकल छात्रों में तनाव और शैक्षणिक प्रदर्शन। जे कोल फिजिशियन सर्ज पाक, 23(1), 67-71।
7. कोमन, सी., तिरू, एल. जी., मेसेसन-श्मित्ज़, एल., स्टैनसिउ, सी., और बुलार्का, एम. सी. (2020)। कोरोनावायरस महामारी के दौरान उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षण और सीखना: छात्रों का दृष्टिकोण। स्थिरता, 12(24), 10367।
8. एरिस्टोवनिक, ए., केरज़िक, डी., रावसेलज, डी., टोमाज़ेविक, एन., और उमेक, एल. (2020)। उच्च शिक्षा के छात्रों के जीवन पर कोविड-19 महामारी का प्रभाव: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य। स्थिरता, 12(20), 8438.
9. चोई, एच. सी., और मरे, आई. (2010)। संधारणीय सामुदायिक पर्यटन के प्रति निवासियों का दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ सस्टेनेबल टूरिज्म, 18(4), 575-594।

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com